UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-12, अंक-41, अपैल - जून 2022

ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408

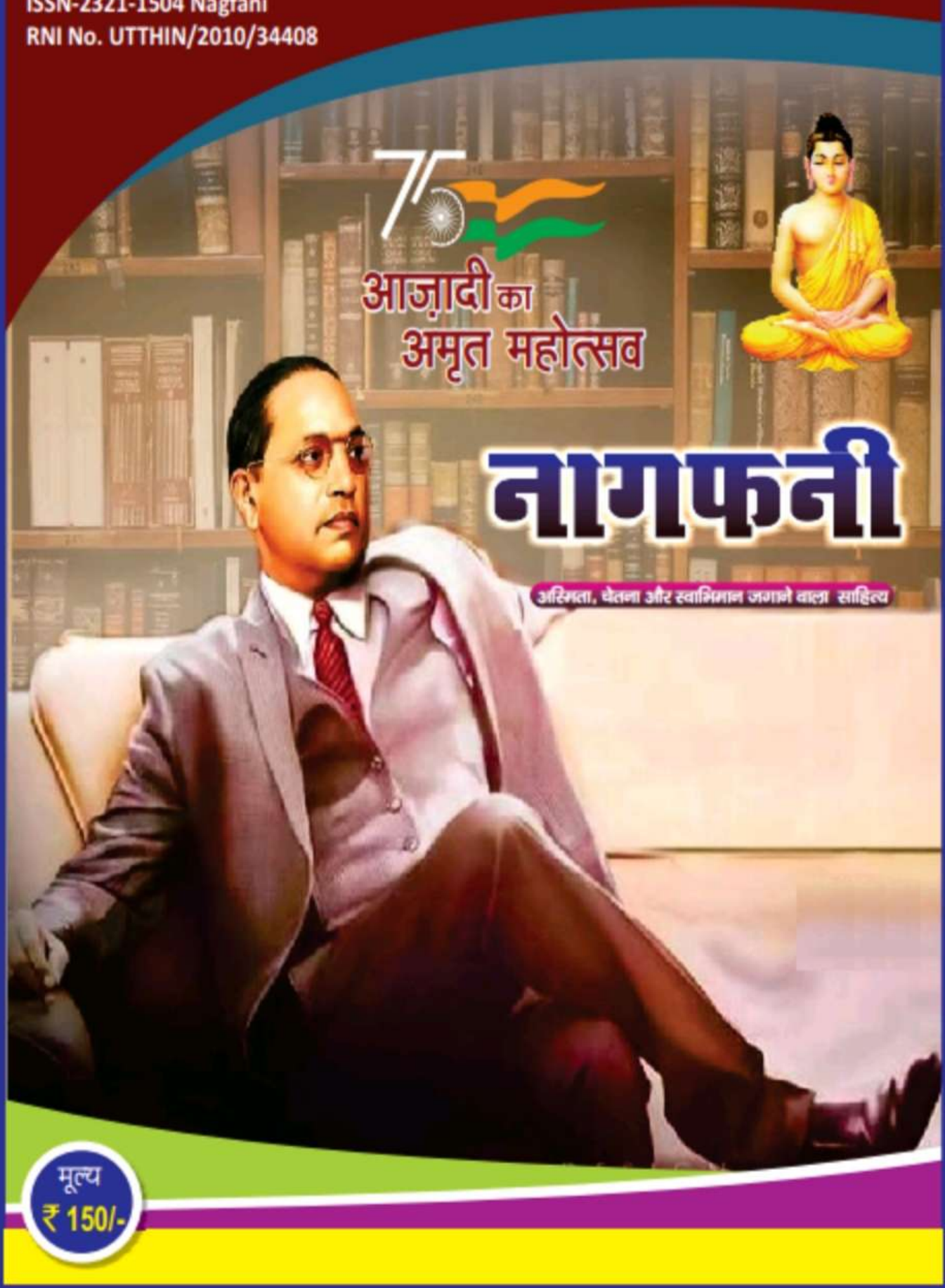

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

मूल्य
₹ 150/-

नागफनी

A Peer Reviewed Refrred Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NagfaniRNI No.UTTHIN/2010/34408

संपादक
सपना सोनकर

सह संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ.एन.पी.प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

वर्ष-12 अंक41,अप्रैल -जून 2022

सलाहकार मण्डल (Peer Review Comittee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्यँ प्रदेश)
डॉ.एन. एस. परमार, बड़ौदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सालुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ.ओम प्रकाश सैनी, कैथल (हरियाणा)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ.एन. पी.प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन–423/Aअंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

मुख पृष्ठ—डॉ. आजम शेख, मैत्री ग्राफिक्स, सावंगी (ह), औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी -248179, उत्तराखण्ड, दूरभाष : 0135-6457809 मो.0941077718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी. आर. -62 ए ब्लॉक कॉलोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म. प्र. पिन-486886 मो. 09752998467

सहयोग राशि -150/-रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000/-रुपये, पंच वार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/-रुपये, पंच वार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए –3000/-रुपये, विदेशों में$50 आजीवन व्यक्ति-6000/-रुपये,संस्था-10,000/-रुपये।

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक–A/C –8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001
Branch-sidhi, NIRPAT PRASAD PRAJAPATI

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।**'नागफनी'**में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमेंसंपादक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं ।**'नागफनी'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gamil.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:–http:naagfani.com

नागफनी

अनुक्रम

पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय .. 5

साहित्यिक विमर्श

1. गिरिधर कविराय के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक-बोध-डॉ. समरेन्द्र कुमार 6-7
2. ज़िम्मेदारी का शुल्क अदा करती असगर वजाहत की कहानियाँ -कपिल देव प्रसाद निषाद 8-9
3. सोहनलाल द्विवेदी रचित 'भैरवी' काव्य संग्रह और स्वाधीनता आंदोलन -डॉ संजय नाईनवाड 10-11
4. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में प्रतिबिम्बित गांधी दर्शन-डॉ.दिनेश साहू 11-13
5. अस्मिता विमर्श: कुछ चिंता और कुछ चिंतन-डॉ. प्रवीण कुमार 14-16
6. तमाशा : लोक परंपरा -प्रा.राजेश दत्तात्रय झनकर 17-18
7. खड़िया का घेरा नाटक की प्रासंगिकता- डॉ.रूपेश कुमार सिंह 18-19
8. मुक्तिबोध के काव्य में पूंजीवादी राजनीतिक चेतना -डॉ.एन.पी.प्रजापति 20-22
9. शिक्षा ही गुलामी कि जंजीरों को तोड़ सकती है :नीला आकाश-डॉ.वीरेन्द्र प्रताप 23-24
10. नीरज काव्य में दार्शनिक तत्व-प्रो.मन्जुनाथ एन.अंबिग 25-26
11. 'विसर्जन' में भूमंडलीकरण का सांस्कृतिक वर्चस्व-उमा बणिचुलल 27-28
12. महादेवी वर्मा : हिंदी के विशाल मंदिर की वीणा-पाणि- डॉ.सुरेन्द्र शर्मा 28-30
13. मुक्तिबोध की कविता में व्यवस्था विमर्श ,'भूरी भूरी घाक धूल' के संदर्भ में-डॉ.जस्टी एम्मानुवल 30-31
14. मेजर एहतेशाम के कथा साहित्य में अभिव्यक्त संघर्ष और संवेदना के रूप-जरीना.ज.ईटी 32-33
15. ढाई बीघा जमीन : आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में-डॉ.जयंत ज्ञानोबा बोबडे 34-35
16. तिरूमुरुगाट्टुपडै-एक विहंगम दृष्टि (मुरुगन तक मार्गदर्शन)-डॉ.एस.प्रीति 36-37
17. विद्यानिवास मिश्र के निबंध : विचार और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति-डॉ.नीरज शर्मा 38-39
18. स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय भाषाओं का योगदान-डॉ. एस. रज़िया बेगम 40-41
19. राजेश जोशी की कविताओं का प्रतिरोधी तेवर-डॉ.निम्मी ए.ए 41-42
20. उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री चेतना-पारोमिता दास 43-44
21. 'सादर आपका': बिगड़ते पारिवारिक सम्बन्धों की संघर्ष गाथा -डॉ.अन्सा ए 45
22. ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'मुंबई कांड' कहानीमेंअम्बेडकरवादी विचारों का चित्रण-डॉ.सोनकांबले अरुण अशोक 46-48
23. उस चिड़िया का नाम'उपन्यास में अभिव्यक्त उत्तराखंड का दुर्गम जीवन-अजय सिंह राव 49-50
24. कालजयी कवि नेपाली की कविता का निहितार्थ- रौशन कुमार /डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र 50-52
25. समकालीन हिन्दी कविता में अभिव्यक्त किसान जीवन(केदारनाथ सिंह के विशेष सन्दर्भ में)- नरेन्द्र जादम 53-55
26. हिंदी रंगमंच के विकास में नाट्य-निर्देशिकाओं का योगदान-अजीत कुमार सिंह/डॉ.मधु कौशिक 56-57
27. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथाओं में भाषा-वैशिष्ट के सामाजिक स्वरूप का अध्ययन -अनुराधा शुक्ला 58-59
28. परशुराम शुक्ल के बाल कहानियों में निहित नैतिक सन्देश-एआर.मुत्तुनाच्चम्मै/डॉ.बी.कामकोटी 60-61
29. 'बादल में बारूद' यात्रावृत्तांत का विश्लेषण-मधुसूदन 61-63
30. अज्ञेय के साहित्य में पारंपरिक सरोकार-रचना तंवर 64-65
31. रामचरितमानस के राम और मानवीय मूल्य-जयन्ती/डॉ.रामरति 66-67
32. मोहन राकेश के कथा साहित्य में परंपरागत और आधुनिक मूल्यों का द्वन्द्व-गजराज सिंह /डॉ.नवनीता भाटिया 68-69

स्त्री विमर्श

1. दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में नारी शोषण की समस्या-डॉ.पारुल सिंह 70-71
2. रुदन गीत: स्त्री रुदन के निहितार्थ (संरचना-प्रकार्यात्मक विश्लेषण)-शिव बाबू/वीरेन्द्र प्रताप यादव 71-73
3. कैशोर्य-अस्मिता के बहाने स्त्री-अस्मिता की तलाश : गंटूमूटे-अनुज कुमार 74-75
4. हिंदी साहित्य में नारी विमर्श-राजपाल सिंह यादव 76-77
5. पुरुष समाज में नारी का अस्तित्व-प्रतिभा सिंह 78-79
6. माधव कौशिक के साहित्य में नारी विमर्श-हरी राम 80-81
7. इक्कीसवीं सदी के प्रमुख मुस्लिम लेखकों के उपन्यासों में सामाजिक समस्याएँ(स्त्री संदर्भ)-शेख़ अताउल्लाह 81-83
8. एक और पांचाली उपन्यास में चित्रित जीवन शिक्षण-हरिजन प्रकाश यमनप्पा 84-85
9. समकालीन परिप्रेक्ष्य में शिवमूर्ति का उपन्यास 'त्रिशूल: एक अध्ययन-चन्द्रावती 85-87
10. महुआचरित में स्त्री का अंतर्द्वन्द्व-प्रतिभा सिंह 88-89

आदिवासी विमर्श

1. हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी समाज-डॉ.अमिय कुमार साह 90-91
2. पूर्वोत्तर भारत का आदिवासी समुदाय और उनका संसदीय प्रतिनिधित्व:एक विवेचन -डॉ.राजबहादुर मौर्य 92-95
3. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी एवं दलित अस्मिता-डॉ.ललित कुमार श्रीमाली 95-97

दलित विमर्श

1. रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा नागफनी में चित्रित विद्रोही स्वर-डॉ. दोड्डा शेष् बाबू 98-99

3. हिन्दी आत्मकथा में दलित स्त्री विमर्श (कौसल्या बैसन्त्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' के विशेष सन्दर्भ में)- डॉ.विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य' 102-103
4. समाज में दलित वर्ग की पीड़ा और मुक्ति का सशक्त दस्तावेज : जूठन डॉ. राजन तनवर 104-105
5. 'गटर का आदमी' : दलित उत्थान एवं बाजारीकरण की यथार्थ अभिव्यक्ति -दीपाली 106-107

हिन्दी आत्मकथा में दलित स्त्री विमर्श
(कौसल्या बैसन्त्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ.विनोद कुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
अध्यक्ष, शोध निर्देशक एवं निमंत्रित सदस्य
हिंदी विभाग हिंदी अध्ययन मंडल
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा,विश्वविद्यालय
उस्मानाबाद,औरंगाबाद

शोधसार :-

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक भारतवर्ष में एक कुरीति चल पड़ी थी। जिसमें 'स्त्री शूद्रोऽनाधियतां इति श्रुतेः ।' कहकर मानव समाज के एक महत्वपूर्ण अंग को मानव बनने ही नहीं दिया। आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में सत्तर के दशक में 'स्त्री विमर्श' और नब्बे के दशक में 'दलित विमर्श' जैसी अवधारणाएँ सामने आ गयीं और परम्परागत साहित्यिक ढांचें में एक प्रकार का परिवर्तन देखने को मिला। यह परिवर्तन मात्र परिवर्तन नहीं था, अपितु युगांतकारी परिवर्तन था। हालाँकि ....हिंदी में दलित स्त्री के पहली आत्मकथा कौसल्या बैसन्त्री लिखित 'दोहरा अभिशाप' (1999) हैं। इस आत्मकथा ने केवल अभिजात साहित्य में ही नहीं अपितु दलित साहित्य में भी एक हाहाकार उठा दिया था। दलित पुरुषों ने इस आत्मकथा के विरोध में ऐसा तूफ़ान खडा किया कि अगलें 12 वर्षों तक अन्य किसी दलित स्त्री ने आत्मकथा लिखने का साहस ही नहीं किया। यद्यपि सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' (2011) के प्रकाशन के उपरांत अन्य दलित स्त्रियों की आत्मकथाएँ सामने आ गयीं। जिनमें सुशीला राय की 'एक अनपढ़ कहानी', रजनी तिलक की 'अपनी जमीं, अपना आसमाँ', अनिता भारती की 'छूटे पन्नों की उड़ान', कावेरी की 'टुकड़ा टुकड़ा जीवन', सुमित्रा महरोल की आत्मकथा 'टूटे पंखों से परवाज तक' और कौशल पवार की 'बवंडरों के बीच'! किन्तु जिस समय जितना साहस कौसल्या बैसन्त्री ने किया, उतना साहस कम से कम उस समय तक तो कोई दलित स्त्री नहीं कर सकी।

कुंजी शब्द :- शूद्र,हरिजन, दलित, महात्मा ज्योतिराव फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, ऑल इण्डिया शेड्यूल्ड कास्ट स्टूडेण्ट फेडरेशन, मिनीसोटा विश्वविद्यालय (अमेरिका), बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (काशी), पंजाब विश्वविद्यालय (चंडीगढ़), स्वाधीनता सेनानी, चिन्तक, लेखक, दलित पुरुष की 'पत्नी', परमेश्वरी प्रकाशन, हंस पत्रिका, अभिशप्त जीवन, अवहेलना, विधुर, मृत्यु, अन्तिम संस्कार, आन्दोलनकर्त्री, राष्ट्रपति, तलाक, संघर्ष, गुजारा भत्ता आदि।

परिचय :-कौसल्या बैसन्त्री का जन्म 8 दिसम्बर 1927 के दिन महाराष्ट्र के नागपुर महानगर की खलासी लाईन में हुआ। आपकी माता का नाम भागीरथी और पिता का नाम रामाजी कोन्हजी नन्देश्वर था। कौसल्या की नानी बाल-विधवा थी। बाद में उसका पुनर्विवाह एक जमींदार से हो गया। लेकिन ये नानाजी बड़े गुस्सेल थे। रोज के झगड़े से तंग आकर नानी अपने बच्चों को लेकर नागपुर चली आई। यात्रा में ही उनकी दो सन्तानें एक बेटा और एक बेटी काल के गाल में समा गये। केवल कौसल्या की माँ भागीरथी ही बच पाई। बाद में नानी जी की पण्ढरपुर यात्रा से लौटते समय मृत्यु हो गई। माता भागीरथी और पिता रामाजी स्वयं प्रौढ़ शिक्षा अभियान के तहत पढ़ना-लिखना सीख चुके थे। कौसल्या के माता-पिता ने डॉ. बाबासाहब आम्बेड़कर जी का भाषण सुनकर अपनी सभी सन्तानों को पढ़ाने का निर्णय लिया। पिता जी जब कबाड़ी का व्यवसाय करते थे, तभी से कौसल्या को पढ़ने का चस्का लगा। वह मराठी और हिन्दी की पत्रिकाएँ पढ़ती रहती। कौसल्या ने इन्हीं दिनों हिन्दी के सुविख्यात कहानीकार पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'उसने कहा था' भी पढ़ी। आपको हिन्दी उपन्यासों का मानो व्यसन लग चुका था। विवाह से पूर्व कौसल्या की शिक्षा नागपुर के हिस्लॅप महाविद्यालय में इण्टरमीजिएट तक हो चुकी थी। कौसल्या ने कुछ दिनों तक 'इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट' में क्लर्क का काम भी किया। उन्होंने मात्र नौवी कक्षा से ही सामाजिक कार्यों में सहभागी होना आरम्भ किया। वे 'वामदल', 'महिला समिति', 'बरार शेड्युल्ड कास्ट स्टूडेण्ट फेडरेशन', 'ऑल इण्डिया शेड्यूल्ड कास्ट स्टूडेण्ट फेडरेशन', 'नागरिक कल्याण समिति' और 'भारतीय महिला जागृति परिषद' से सम्बन्धित रही।

1947 के ऑल इण्डिया शेड्यूल्ड कास्ट स्टूडेण्ट फेडरेशन के नागपुर अधिवेशन में उनकी मुलाकात प्रसिद्ध दलित चिन्तक डॉ. देवेन्द्रकुमार बैसन्त्री से हुई। दोनों में वैचारिक समानता के कारण मैत्री भाव जागृत हो गया। दोनों में पत्र-व्यवहार चलता रहा। देवेन्द्रकुमार एम. ए., एल. एल. बी. तक पढ़े लिखे विद्वान थे। हिन्दी-अंग्रेजी के लेखक, ताम्रपत्र प्राप्त स्वाधीनता सेनानी, प्रामाणिक सरकारी अधिकारी (उप प्रधान सूचना अधिकारी) और आम्बेड़करवादी चिन्तक के रूप में विख्यात रहे। उन्होंने बीस से भी अधिक पुस्तकें और सौ से भी अधिक लेख-शोधालेखों का लेखन हिन्दी-अंग्रेजी भाषाओं में किया है। आपकी पुस्तकों में 'डॉ. आम्बेड़कर : ए टोटल रिवोल्युशनरी' अत्यन्त प्रसिद्ध है, जो अमरिका के मिनीसोटा विश्वविद्यालय में सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में प्रयुक्त हो रही है। आपको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी ने के सामाजिक क्रान्तिकारी' भी पर्याप्त लोकप्रिय रही है। देवेन्द्र जी मानवेन्द्रनाथ रॉय के 'रॅडिकल डेमोक्रॅटिक पार्टी' और 'उत्तर प्रदेश शेड्युल्ड कास्ट फेडरेशन' से भी सम्बद्ध रहे हैं।अनुसन्धान परक शोधकार्य 'सोशल लेजिस्लेशन इन इण्डिया' पर डी. लिट. यह सर्वोच्च उपाधि भी प्रदान की है। आपकी एक पुस्तक 'भारत 16 नवम्बर 1947 के दिन कौसल्या और देवेन्द्रकुमार का विवाह सम्पन्न हो गया। विवाह के बाद कौसल्या ने पंजाब विश्वविद्यालय से बी. ए. उपाधि भी प्राप्त की। उनके चार बेटे और एक बेटी हुए। किन्तु.....किन्तु....किन्तु इतने बड़े स्वाधीनता सेनानी, चिन्तक और लेखक का दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन अत्यन्त विरोधाभासी था। देवेन्द्रकुमार विधुर हैं यह जानकर भी कौसल्या ने उनके साथ विवाह किया था। किन्तु वे पन्द्रह-पन्द्रह दिनों तक बिना बताये घर के बाहर ही रहते थे। उनका परिवार की ओर किसी प्रकार का ध्यान नहीं था। दो बेटों की मृत्यु और अन्तिम संस्कार के समय भी वे अपने परिवार के साथ नहीं थे। चालीस वर्षों तक हर रोज की गन्दी-गन्दी गालियाँ, मार पीट, अमानुष व्यवहार से तंग आकर कौसल्या ने देवेन्द्रकुमार से कानूनन तलाक ले लिया और अपने पति से दस वर्षों तक न्यायालयीन लड़ाई लड़ते हुए गुजारा भत्ता पाकर ही रहीं। हालाँकि वे अपने बेटे आतिशकुमार या बेटी सुजाता के घर रहते हुए सुखपूर्वक जीवन बिता सकती थी। पर उन्होंने न्याय मिलने तक अपने पति से साथ संघर्ष किया। यही दलित स्त्री का अपने दलित पति के प्रति विमर्श है दलित विमर्श से साथ-साथ स्त्री विमर्श है। सही मायने में वे इस 'दोहरे अभिशाप' से मुक्त हो पाई हैं।

प्रेरणा :-

कौसल्या बैसन्त्री के इस संघर्ष पूर्ण जीवन को शब्दबद्ध करने की प्रेरणा देने का कार्य मराठी की सुप्रसिद्ध लेखिका कुमुद पावड़े, ऊर्मिला पवार और मीनाक्षी मून ने दी। [1] क्योंकि इन लेखिकाओं के सामने इसी तरह की आत्मकथा पहले से ही विद्यमान थी। मराठी दलित स्त्रियों की आत्मकथाएँ जैसे - बेबी कांबळे की आत्मकथा 'जिणं आमुचं', शांताबाई कांबळे की 'माझ्या जल्माची चित्तर कथा', शांताबाई दाणी की 'रात्रंदिन आम्हां', उर्मिला पवार की 'आयदान', कुमुद पावडे की 'अंत:स्फोट', मुक्ता सर्वगौड की 'मिटलेली कवाडें', यशोधरा गायकवाड की ''मी माझी', जनाबाई गिऱ्हे की 'मरणकळा', विमल गोरे की 'तीन दगडांची चूल', सुविख्यात दलित चिन्तक और कवि नामदेव ढसाळ की पत्नी मल्लिका अमर शेख की आत्मकथा 'मला उध्वस्त व्हायचयं' थी।

अन्य भारतीय भाषाओं में भी 'लाइफ ऑफ़ ए अनटचेबल' (अंग्रेजी- वीराम्मा), 'करक्कू' (तमिल - बामा फ्युस्टेना मेरी), 'आलो अंधारी' (बंगाली - बेबी हालदार), 'आमी केनो चाँडाल लिखी' (बंगाली - कल्याणी ठाकुर) आदि कौसल्या बैसन्त्री ने 78 वर्ष की आयु में 1999 में अपनी आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' लिखी। कौसल्या इन लेखिकाओं को इस बात का श्रेय अवश्य देती हैं। किन्तु कौसल्या बैसन्त्री के जीवन और लेखन का सही-सही प्रेरणास्रोत तो महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ. बाबासाहब आम्बेड़कर ही हैं। क्योंकि इन दोनों महापुरुषों ने ही सही अर्थ में स्त्री-शिक्षा और स्त्री की आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को साबित किया। इस गुरुतर कार्य के लिए फुले को अपने पिता का घर छोड़ना पडा तो डॉ. आंबेडकर को मंत्री पद से त्यागपत्र देना पडा। अतः यह आत्मकथा हिन्दी की पहली दलित महिला आत्मकथा सिद्ध होती है।

किसी मराठी भाषी परिवार में जन्मी दलित स्त्री ने अपनी आत्मकथा के लिए हिंदी भाषा का चयन करना भी एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। कौसल्या बैसन्त्री लिखती हैं – " मेरी मातृभाषा मराठी है, परन्तु मैंने अपना कथ्य हिंदी में लिखा है । हिंदी और मराठी की लिपि एक ही है (देवनागरी) । इसलिए हिंदी में लिखने में ज्यादा दिक्कत नहीं आयी। फिर भी मात्रा और व्याकरण की गलतियाँ हो सकती हैं। मातृभाषा मराठी होते हुए हिंदी में लिखने का प्रयोजन क्यों ? क्योंकि हिंदी में दलित स्त्रियों के आत्मकथा साहित्य का अभाव है। "[2]

1999 में अपनी आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' और हंस पत्रिका के दिसम्बर 2004 के विषेशांक के लेख के अतिरिक्त उन्होंने कुछ भी नहीं लिखा। अर्थात् कौसल्या बैसन्त्री की एकमात्र रचना 'दोहरा अभिशाप' ही है। कौसल्या बैसन्त्री की 24 जून 2011 के दिन जीवन के 84 पतझर देखकर मृत्यु हो गई।

कथ्य :-

कौसल्या बैसन्त्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' दिल्ली के परमेश्वरी प्रकाशन के द्वारा 1999 में प्रस्तुत हो गई। इस आत्मकथा को मात्र 124 पृष्ठों में और 28 प्रकरणों में शब्दबद्ध किया गया है। इस आत्मकथा के शीर्षक से ही स्पष्ट होता है कि विवाह से पूर्व 'दलित' के रूप में जन्म लेने का अभिशाप और विवाह पश्चात् जीवन में 'दलित' होने के साथ-साथ एक दलित पुरुष की 'पत्नी' होने के दोहरे अभिशाप का दर्द सहनेवाला लेखिका का अभिशप्त जीवन कितना खतरनाक रहा होगा। एक तो दलित और ऊपर से महिला या एक तो महिला और ऊपर से दलित इन दोनों रूपों में इस शीर्षक की सार्थकता अनुभूत होती है। लेखिका ने अपनी इस आत्मकथा में तीन पिढ़ियों के संघर्ष को चित्रित करने का सफल और सार्थक प्रयास किया है। लेखिका तो अपने पिता की प्रेरणा से शिक्षित तो होती है, पर इस बात के लिए उसके माता-पिता को अत्यन्त वेदनामय जीवन जीना पड़ता है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक लेखिका को केवल और केवल अवहेलना का ही सामना करना पड़ा है। इसी अवहेलना का सहजात विद्रोह भी लेखिका में मन में पलता रहता है। किन्तु विवाहोपरान्त की परिस्थिति और अधिक गम्भीर हो जाती है। पति विद्वान तो होता है किन्तु पितृसत्ताक मानसिकता से प्रभावित होता है। विवाह पूर्व की आन्दोलनकर्त्री पत्नी विवाह के बाद मात्र एक वस्तु ही बन जाती है। उच्च शिक्षित होने के बावजूद लेखिका को केवल घर के कामों में ही उलझाया जाता है। पैसे-पैसे के लिए मोहताज किया जाता है।

सुप्रसिद्ध आलोचक प्रो. डॉ. गरिमा श्रीवास्तव जी लिखती हैं – " स्त्री आत्मकथ्यों पर विचार करने के लिए मोटे तौर पर चार निकष ग्रहण किये जा सकते हैं जिनमें जाति, वर्ग, वर्ण, जेंडर (लिंग) के साथ सम्प्रदाय या धर्म को भी देखा जाना चाहिए।"[3]

स्वकथन पर सामुहिक अभिव्यक्ति :-

यदि गहन अध्ययन किया जाए तो यह पता चलता है कि कौसल्या बैसन्त्री की आत्मकथा व्यक्तिगत अभिव्यक्ति न होकर समूह की अभिव्यक्ति ही है। लेखिका बचपन में ही जातिगत अभिशाप को भोगती है। वे लिखती हैं - ''मैं अस्पृश्य हूँ, यह भावना मेरे मन से जाती ही नहीं थी। मुझे स्कूल में रखे पानी के घड़े से पानी निकालकर पीने में भी डर लगता था।''[4] बार बार होनेवाले अपमान से संत्रस्त होकर कौसल्या हीन भावना से ग्रस्त हो जाती है। वह स्कूल के किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम,नाटक, खेल, प्रतियोगिता आदि में हिस्सा नहीं ले पाती। ''एक तो दलित जाति से, दूसरे ग़रीबी, तीसरे स्त्री होने के कारण लेखिका को कई बार अपमानित और बेइज्जत होना पड़ा। स्कूल में हुए अपमान लेखिका के ऊपर पुस्तक चोरी का झठा इल्जाम तथा कक्षा की पिकनिक में लेखिका की तेल की शीशी का प्रयोग न करना लेखिका के बाल मन में बुरी तरह से हीन भावना पैदा कर गया।''[5]

सवर्णों के लड़के, लड़कियाँ और औरतें उस पर घृणास्पद रीति से हँसती थी। ''ये हरिजन बाई जा रही है। दिमाख तो देखो इसका बाप तो भिखमँगा है और ये साईकिल पर जाती है।''[6] जब कौसल्या के साथ लैंगिक दर्व्यवहार करने की कोशिश की जाती है। किन्तु वह साहसपूर्वक प्रयासों से स्वयं को बचाती है। गृहस्थी में आर्थिक अभाव का होना सबसे बड़ा अभिशाप होता है। कौसल्या अपने पति से छोटी-छोटी चीजों के लिए पैसे माँगती तो उन्हें निराश होना पड़ता। वे लिखती हैं - ''मेरे कपड़े, चप्पल की सिलाई के लिए पैसे लेने में बहुत पीछे पड़ना पड़ता था, तब पैसा देता था। वे भी पूरे नहीं पड़ते थे। कभी नहीं भी देता। जब अगले महिने पैसे देने की बात आती तब कुछ-न-कुछ कारण निकालकर झगड़ा करता। मारने दौड़ता। ''[7]

डॉ. बाबासाहब आम्बेड़कर जी के विचारों के प्रेरित होकर जीवनभर संघर्ष करती है और पति से प्रताडना सहकर भी अन्याय को चुपचाप न सहते हुए विरोध करती है। देवेन्द्र कुमार के बारे में लेखिका कहती है - ''अपने मुँह से कहता हूँ मैं बहुत शैतान आदमी है। उसने मेरी इच्छा, भावना, खुशी की कभी कद्र नहीं की। बात-बात पर गाली वह भी गन्दी-गन्दी और हाथ उठाता। मारता भी वह बहुत क्रूर तरीके से। ''[8] पति से तलाक भी ले लेती है। दस वर्षों का कड़ा संघर्ष कर पति के अत्याचारों से मुक्त हो जाती है। न्यायालय से भी खण्डित न्याय मिलने पर कौसल्या 'महिला समता समाज' के माध्यम से राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह से मिलकर दलित महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के विरोध में संवाद भी करती है और अन्ततः न्याय पा ही लेती है।

ऐसी महान देवी को 11 वीं बरसी पर कोटी-कोटी नमन !!!

******

सन्दर्भ:-

1. कौसल्या बैसन्त्री कृत दोहरा अभिशाप: एक अनुशीलन- डॉ. भीमराव पाटिल, प्रा. वर्षा कांबळे, पृ. 17
2. दोहरा अभिशाप - कौसल्या बैसन्त्री, पृ. 4
3. दलित स्त्री की आत्मकथाएँ : अकिंचन स्वरों की महाप्राण पुकार – गरिमा श्रीवास्तव, पृ. 1
4. दोहरा अभिशाप - कौसल्या बैसन्त्री, पृ. 53
5. अपेक्षा (सम्पादक-तेजसिंह) जुलाई-दिसम्बर 2010, पृ. 23
6. दोहरा अभिशाप - कौसल्या बैसन्त्री, पृ. 61
7. दोहरा अभिशाप - कौसल्या बैसन्त्री, पृ. 105
8. दोहरा अभिशाप - कौसल्या बैसन्त्री, पृ. 104

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखिए http%//naagfani.com

रोमी प्रेस बैढ़न / 9425179103